सरोजिनी काक का जन्म श्रीनगर, कश्मीर में 1929 में हुआ। विवाह के बाद अपने पति, राम नाथ काक के साथ जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के अनेक गाँवों और शहरों में रहीं, और अपने बच्चों को बड़ा करते कई वर्ष निकल गये। बचपन से साहित्य में रुचि थी, लेकिन कविता लिखना केवल दस साल पहले शुरू किया। आजकल वे दिल्ली और अमरीका में रहती हैं।

यह कविताएँ एक स्तर पर सरोजिनी काक की कश्मीर और अन्य जगहों की जीवन स्मृतियों के बारे में हैं। दूसरे स्तर पर यह एक आंतरिक वृत्त से दूर हो जाने का क्रम बताती, नगर में रहते हुए वैराग्य की इच्छा की अभिव्यक्ति करती हैं। इन कविताओं में एक अनोखी सरलता है। यद्यपि प्रस्तुत संग्रह सरोजिनी काक की प्रथम पुस्तक है, इन कविताओं से उनका नाम कश्मीर की गौरवशाली कवियत्रियों में गिना जायेगा।

आवरण छाया: सथ्थू , श्रीनगर में काक परिवार का घर
आभार: जॉन चेरियन

नगर और वैराग्य

इक्यावन कविताएँ

सरोजिनी काक

नगर और वैराग्य

इक्यावन कविताएँ

सरोजिनी काक

वितस्ता
नई दिल्ली
2004

© सरोजिनी काक 2004

प्रकाशक: वितस्ता, नई दिल्ली

टाइपसेटिंग: तूलिका प्रिंट कम्यूनिकेषन सर्विसस,
नई दिल्ली
मुद्रक: पॉल्स प्रेस, नई दिल्ली

विषय सूची

नगर 7
वासना 8
प्रभु प्रेम 10
दरस दिखाओ 11
माया 12
सितार 13
उलझन 14
कारावास-मुक्ति 15
पहचान 17
आकाश का भार 18
कालचक्र 19
पुराने तार 21
प्रकृति और परछाई 22
चान्द का ठंडा तेज़ 23
दिल्ली में तड़प 25
आँख में स्थिर चित्र 27
कश्मीर में संग्राम 28

पक्षियों से प्यार 31
स्वर्ग और नरक 32
नाटक 33
वैराग्य और प्रेम 34
तत्त्वों की पिपासा 35
घास 36
फूल 38
हंसी 39
चाह 41
समय 42
पहाड़ 44
पत्थर 45
पृथिवी 46
आप: 47
वायु 48
अग्नि 49
आकाश 50
रिश्ता 51
प्रलय 52
प्रियतम के गुण 53

माया 54
मां 55
विदाई 56
पूर्णता 57
कला 59
कामना 60
राम और कृष्ण 61
व्यूहचक्र 63
भीतर की शक्तियां 64
प्रकृति 66
सच्ची कमाई 67
उपवन 69
संकल्प 71
साहस 72

नगर

एक उत्तम नगर –
मनमोहक, प्यारे घर
यहाँ हैं।
कभी तेज धूप,
कभी ठंडी वर्षा –
कितने रूप हैं!

चारों ओर पुष्प हैं
पड़ाव सुहावना है
पर जिन्होंने बुलाया था
वह विमान पर बिठाने के लिये
न होंगे।

माँ की अद्‌भुत ममता है।
जिस चिन्गारी से मैं दूर रहती थी,
उसकी लपेट में आई हूँ।

शीध्र मैं अपने सही रास्ते पर
आ जाऊँगी।
वहाँ केवल वैराग्य है!

वासना

पुरानी वासना का तोड़ना
कहीं पर भी हो,
नई वासना न जमाओ।

मोह न हो
ममता को हटाओ।
यह बेड़ियाँ
अपने आप कट जायेंगी।

नाम जपते रहो
काम करते रहो
मन के विषयों को
वश से हटाते चलो।

साथ कोई न हैं।
मंजिल दूर है
रास्ता कठिन -
कांटों पर चलना होगा।

मैं कैसे कहूँ?

यह बेड़ियाँ
जो खिंचे जा रहीं हैं
सदा दे रहीं हैं -
कहाँ जा रहीं हैं।

विचारों का अलग संसार
कैसे प्रकट करूँगी?

पथ पर इतने मोड़ हैं
जो चलने पर विवश करें
मोह से -
एक मायाचक्र ने घेरा है।

ममता ही
आफत-जंजाल का मूल है।

असली बन्धु
ईश्वर है;
असली धन
उसका स्मरण है।

प्रभु प्रेम

मैं हूँ, मेरा मन है, सारा प्यार
प्रभु तुम को जाये, तुम को जाये।
गहरी आशाओं की नई पुकार
प्रभु कानों में आए, कानों में आए।

जब भी रहे जहाँ भी मेरा यह मन
हर पुकार पर उत्तर दे हर क्षण
जो बाधाएँ है, जिनका है आकर्षण,
प्रभु तोड़ गिराए, तोड़ गिराए।

बाहर की भीख भरी जो थाली
अब तो है वह बिलकुल खाली
दान तुम्हारा पा मेरा हृदय
प्रभु भर भर आए, भर भर आए।

प्रियतम मेरे, हे मेरे अंतरतर
इस जीवन में जो कुछ भी है सुंदर
आज तुम्हारे गीतों की गुंजन से
प्रभु गूंज उठाए, गूंज उठाए।

दरस दिखाओ

मन को, अपनी काया को
मिटा डालना चाह रही मैं
इस काली छाया को।

उस आग में जला डालना
उस सागर में मिला डालना
उन चरणों में गला डालना
रौंद डालना माय को
मन को, अपनी काया को।

तुम मेरे इन अनुभवों में
बाधा नहीं कहीं पाओगे
पूर्ण एक तुम दरस दिखाना
इस झूठी माया को
मन को, अपनी काया को।

माया

अपने आसन सिंहासन से
नीचे उतर पड़े तुम
मेरे सूने घर के द्वारे।

आकर हुए खड़े तुम
मैं अकेले गुनगुना रही थी
गीत गा रही थी मैं।

वह सुर बजा तुम्हारे कानों में
खिंचकर उतर पड़े तुम
मेरे सूने घर के द्वारे
आकर खड़े हुए तुम!

स्वप्नों में आने लगी
तुम्हारी आहट चलने की
आँखें मूंद रखी इस भय से
कि यह सब माया न हो।

सितार

एक-एक कर तार पुराने
फेंको सभी उतार
नए सिरे से बांधो आज सितार।

उजड़ गया है दिन का मेला
सभा जुड़ेगी संध्या बेला
वह आता होगा
जो छेड़ेगा झंकार।

मन के द्वार खोल दो चुपके
जैसे गिरे आकाश से किरणें
सातों लोकों की -
छा जाए आंगन में।

उलझन

उलझा है धन से जन से यह जीवन
तो भी जानो, तुम्हें चाहता है मन।

अंदर तुम हो, हे अंतर्यामी
मुझ से अधिक जानते हो
मुझको, हे स्वामी,
कैसे इस शरीर को कहूँ अपना तन?

अहंकार को पल भर छोड़ न पाई
उसे अगर तज पाती, मिलता जीवन।

जाने कब मेरे जीवन की तार
तुम अपने हाथों ले लोगे
सब देकर कब पाऊँगी तुमको?

तुमने मुझे प्रेम दिया इतना भर
दु:ख भी न होगा, जो अब मर जाऊँ।

कारावास-मुक्ति

यह कैसा कारावास?
जहाँ आवाज़ नहीं
जहाँ मौन ही मौन है।

यह कैसी धड़कन है
जो बास दे रही है
यहाँ सब हैं
तेरे साये के साथ
चल रहे हैं।
सांस के साथ
उनका मिलन है।

धरे रहो,
धीरज हो,
जय निश्चय है
अन्धकार कम हो रहा है
अब बस कुछ भय नहीं।
दौड़ निकल घर से बाहर
देखा हो रहा सिर के ऊपर
अंबर ज्योतिर्मय।

अब डर नहीं
धीरज बाँध के
चलते रहो, रुको नहीं
एक साथ है
केवल स्मृतिआँ ही नहीं
एक रहस्य है
जो साथ छाया बन के
चलता है।

पहचान

नहीं जगा वह सुर वाणी का
शब्द नहीं वह मिलता
प्राणों में ही घुमड़ रही है
गीतों की व्याकुलता।

नहीं देख पाया मुख उसका
सुनी न उसकी वाणी
केवल पल पल सुनती हूँ मैं
पैरों की ध्वनि पहचानी।

बीत गया सारा दिन
राह देखते देखते
आसन उस के लिए बिछाते
दीप नहीं जलाया जाता।

एक आशा छलकती है।

आकाश का भार

इतना भार हम पर है
फिर भी नर
नारायण को नहीं करते प्रणाम।

धूल में पतित
लोट रहे हैं
पर हमारी दृष्टि से ओझल।
अन्त में एक समान कर देगी
धूल और राख।

कालचक्र

वात्सल्य का स्मरण
अब एक स्वप्न है –
एक शान्ति थी तब
चंचलता और जादू।

फिर राक्षस घुसे घाटी में
सोने की मांग थी उनकी
पीतल के बरतन भी
उठा ले गए।

दिन बीतता है
प्रभात से शाम होती है
अब गुज़रती नहीं –
जो जानते थे जीना
चले गए दूर,
अब भाती नहीं यह सृष्टि
पर स्मृतियाँ घेरे हैं –
जितना भुलाएं
उतना घेर लेती हैं।

होंठ चुप हैं
पर यह नयन दिल का राज़ खोलें।
यह लगता है
कि एक छाया पीछा कर रही है।
मुड़ के देखूँ
छाया सिकुड़ जाती है।

हर पल एक विमान यात्रा है
आगे बढ़ते जाते हैं हम
कभी नगर में, कभी जंगल में।

इस चलचित्र के सामने
मौन न रहें तो क्या करें?

एक आहट हुई
वह थे
जैसे एक प्रश्न पूछ रहे थे
मैंने आँखे उठाई।

पर उन्हें दिव्य नेत्रों से ही
देखा जा सकता।

पुराने तार

हृदय के
पुराने तारों को
तूने छेड़ा
जिन भावों के डिब्बे को
बन्द रखा था
उसको तुमने बहुत झिन्झोरा।

मैंने खिड़की से झाँका
चान्द मौन था
कई प्रश्न उठे
मन में
मेरे उत्तर
ओष्ठों पर दबे रहे
जब तक प्रभात की किरणें
खिल उठीं।

प्रकृति और परछाई

एक समय था
जब प्रकृति बोलती थी
हमारे साथ।

एक केन्द्र था उसका
पहलगाम के ऊपर
मामलेश्वर मन्दिर
जहाँ कहते हैं
पाण्डवों के घर थे।
अब घोड़ों पर जाते हैं
वहाँ यात्री
या अमरनाथ की यात्रा के समय
कुछ लोग
इस मन्दिर
पर भी उपस्थित होते हैं।

पर्वत में कुछ ऐसे स्थान है
जहाँ से प्रकृति की परछाई
अभी भी
दीखती है।

चान्द का ठंडा तेज

बचपन की स्मृति -
खेल कूद
उद्यान में घूमना
सहेलियों के साथ मस्ती -
यह सब बदल गया
जब माता-पिता छोड़
मैं नये घर चली।

सब दौड़ रहे हैं,
आकाश में गर्जन है
विमानों की
जिनमें लोग
अतीत के क्षणों का
सोच रहे हैं
और वहाँ भी
खिड़की से बाहर
रात में
चान्द का ठंडा तेज
यह बताता है

कि एक सुन्दरता
हमारे साथ है

यद्यपि हमारे साथी
बिछुड़ चुके हों,
हमारी स्मृति
धुंधलाई जा रही है।

दिल्ली में तड़प

दिल्ली की गर्मी में
सड़क पर
प्यास की तड़प
पानी का गिलास
एक रुपये में
पर सन्तोष नहीं।

रेड़ीवाला बर्फ पर
खीरे और ककड़ी लगाए हुए
इस आश में
कोई आए
स्वयं फल को
केवल देख पाता है।

गाड़ियाँ खचाखच भरी
बैठने के लिए
स्थान नहीं।
बरसात में
झुग्गियाँ पानी में
बह गईं।

अन्य रेशम के कुर्ते के
पसीने से भर आने की
शिकायत कर रहे हैं।

आँख में स्थिर चित्र

क्या मेरी आँखें
धुंधला गई हैं
कि खिड़की के बाहर
मुझे पहलगाम का पुराना नज़ारा
प्रतीत होता है।

एक चलचित्र की तरह
यात्री अमरनाथ के
दिखाई देते हैं।

पूर्णमासी है -
व्रत हो कर
नदी जाएंगे
लिदर के
श्वेत जल में
हाथ डाल कर
समय का एक कण
रुक जाएगा।

कश्मीर में संग्राम

एक स्वप्न था
बचपन में
फिर एक संग्राम।

चौदह वर्ष हुए
नए संघर्ष में
काल की पदचाप
भारी हो गई
जो अपने थे
पराए हो गये।

सृष्टि भी क्या है
जितना भूलें
और याद आती है।

होंठ चुप हैं।
निगाहें,
सारे दिन का रहस्य खोले।

एक साया
पीछा कर रहा है
मुड़ के देखूँ
कोई पास नहीं।

जैसे विमान की उड़ान होती है
ऐसी हृदय की
उड़ते जा रहे हैं हम
एक द्वीप से दूसरे
बचपन के नगर में
वापस निषेध है।

साथ रहकर भी
लोग दूर हैं।
सोचती हूँ
क्यों न मौन रहूँ
पर इस क्षण
एक आहट हुई
सुना एक प्रश्न
आँखे उठाईं मैंने
पर कोई नहीं
एक उपहास।

क्या जन्म जन्म का
साथ होता है?

जब आँख बन्द करती हूँ
वही मूरत खड़ी
चिदाकाश में।

क्या यह भ्रम है?
लोग कहते हैं:
हमें कोई याद
आता नहीं।

पक्षियों से प्यार

मेरे घर में चार चिड़ियाँ हैं
घर में खुली घूमती हैं।
जब मैं बाहर से आकर
द्वार खोलती हूँ,
बहुत खुश होती हैं
यह चिड़ियाँ।

प्रात: की सैर पर
मैं वन के पक्षियों के लिए
चावल और रोटी
ले आती हूँ।

एक गीत सुना मैंने
मुझे हो गया
पक्षियों से प्यार
यही मेरी जिन्दगी।

स्वर्ग और नरक

साहस क्षणबिन्दु में है।
उमंग में है।
स्वर्ग और नरक
अपने हाथ में है।
उद्यम स्वर्ग
आलस्य नरक।
चलते रहो
चरैवेति।

नाटक

नासमझ को बात समझाना
सरल
समझदार को समझाना
और भी सरल
मध्यम के पुरुष को
अत्यन्त कठिन।

उसके लिए
न स्वर्ग है
न नरक
सर्वस्व एक दु:खी नाटक।

न सत्संग का सन्तोष
न आस्था का धीरज
यह नौका
घाट पर दलदल में
फसी हुई।

वैराग्य और प्रेम

सोच, सोच कर
वैराग्य आता है।

ऐसा देश मेरा
जिसके कण कण में भगवान
ऋषियों की पावन धरती
रचे जहाँ पर वेद पुराण
कृष्ण ने दिया
जहाँ गीता का ज्ञान
राम यहाँ का नाम है
पावन धरती महान।

पूजा पद्धति, आराधना
नहीं है धर्म –
वह है कर्त्तव्य
सबके प्रति वैराग्य
सबके प्रति प्रेम।

तत्त्वों की पिपासा

इस पाँच तत्त्व के संसार को
सन्तोष तभी
आनन्द तभी
जब प्रतिक्षण की वासना को
अभिलाषित पदार्थ
मिले।

इच्छा बिना
शक्ति नहीं।
माया का जाल
तत्त्वों को सन्तुष्ट
और पीडित
एक ही समय
करता है।

घास

मैं अपने पथ के प्राचीन विश्रामगृह पहुँची
स्वागत हुआ
पकवान खाये
पर पुराना मित्र न मिला
मेरी आँखें
उसे ढूँढती रहीं।

ममता के कई भ्रम हैं।

प्रातः एक सुहावना दृश्य देखा
गिलास के पेड़
कलियों से पुष्पित थे
जैसे मैं कश्मीर में हूँ।

घास भी कलियों से भरी थी
इस पीली चादर के बीच
कुछ हरे पत्ते
आँख-मिचौनी कर रहे थे।

यह मैं जान न सकी
कि यह कलियाँ घास की अपनी थीं,
या पेड़ों से उधार।

फूल

फूल कितने प्यारे होते।

माली कैसे सींच सींच के
फूलों को ताकत देता है।

लोग उद्यान में आते देख देख
मुस्कराते हैं
कुछ सुगन्ध को सूंघ सूंघ
फुलाते हैं।

कुछ तोड़ते हैं
फेंकते हैं
गुच्छों में सजाते हैं।

क्या यही जगत की रीति है
जिसने फूल पैदा किये
उसका कहीं नाम नहीं।

हंसी

हंसी भी कितनी प्यारी होती
यह बचपन में कितना नचाती
जब भी देखो
वह कहकहे लगाती
मासूम खेल कितने प्यारे होते हैं
हंसने वाले और हंसते
रोने का नाम नहीं
झोली में भर भर प्यार देते हैं।

मैं भी वह थी।
एक दिन सभा में इतना हंसी
मेरे कहकहों की गूंज
दूर बाहर गई।
वह पीछे से आये
मुझे लात मार के चले गये।
मैंने लज्जा से सिर झुका लिया।
पश्चाता करती रही।

वह हंसी, वह कहकहे
मुड़ के मेरे पास न आये।

उन्होंने आग्रह किया
अब हंसो,
पर मेरी हंसी
परिवार में बट गई।

चाह

मेरे छोटे संसार में
परिवार ही हो सब कुछ
मैं नहीं
ऐसा क्यों होता है?

मेरे पास से अवसर निकले
और मेरा ध्यान उधर नहीं
ऐसा क्यों होता है?

हर समय किसी को पाने की चाह
अन्दर वैराग्य
ऐसा क्यों होता है?

समय

समय के हैं कई पड़ाव-
आज यहाँ हैं
तो कल कहीं और।
कल वसन्त था
बच्चे खेल रहे थे
पुष्पों की वर्षा हुई।

बीत गया कल
किसी और प्रहर
कई जीवन बीते
कई दृश्य सूने थे।

समय लम्बा है
मगर नहीं है सत्य।

अगर बिखेरूँ मैं पुरानी यादें
बैठ न पाऊँ अबके पड़ाव पर।

यादें जाती नहीं -
भटक गयी हैं
उलझन समझायें
तो लोग कहें, यह पागल है।

कोई अर्थ नहीं
केवल समय के पड़ाव,
यह दैवी नियम है।

पहाड़

पहाड़ ही पहाड़ सामने दीख रहे
चारों ओर एक ही दृश्य
सब हरा-ही-हरा
कहीं फीका कहीं गहरा।

हर देखने वाले के कितने
रहस्य छुपे
क्या ऐसी भी घाटियाँ हैं
जहाँ प्यार ही प्यार हो?

पत्थर

आत्मा की कौन सी भटकन है
जो मुझे रुलाये,
कहीं तो उसका अन्त होगा?

भटकने की सीमा पर
बैठने को पत्थर होगा,
किसी की मीठी वाणी होगी?

यह कैसा संसार है,
यहाँ कैसी बोली -
एक भोली मुस्कान उभरती है
और फिर हवा
रूखी, रूखी जाती है
जैसे विश्राम करूँ
पुराने टहलने की याद आती है।

पृथिवी

दिल्ली की गर्मी और मिट्टी
घेरे हुए है
और फिर गरीबी
देख कर
मन काँप उठता है
लोगों के पास
मिट्टी का घर भी
रहने के लिए नहीं है।

आपः

तब था
जहाँ देखें
जल -
नदी, कुल्या
पर्वत में आपशार
अब है
बरसात
और फिर महीनों सूखा
और गर्मी
पसीना
पिपासा
बच्चों के आसूँ।

वायु

विमान में बैठे
वायु से तेज़ चलते
एक हल्की
गडगडाहट
बादल रुई जैसे
और महासागर का जल
खिड़की से।

सरोजिनी काक के जीवन के कुछ पन्ने

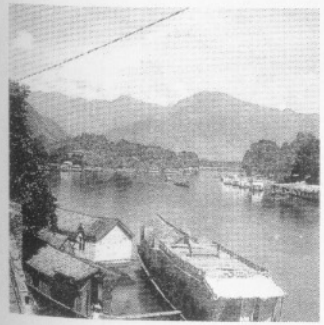

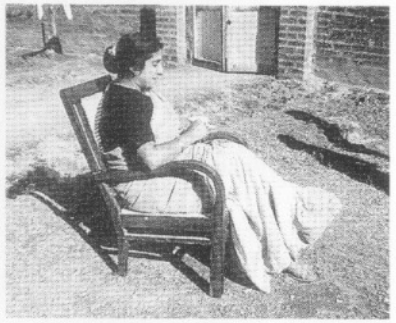

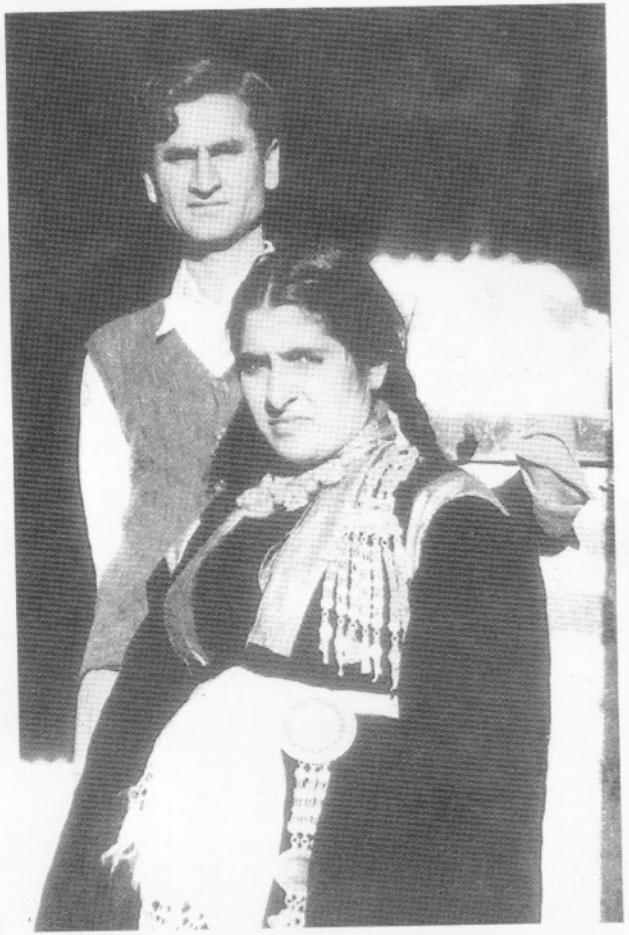

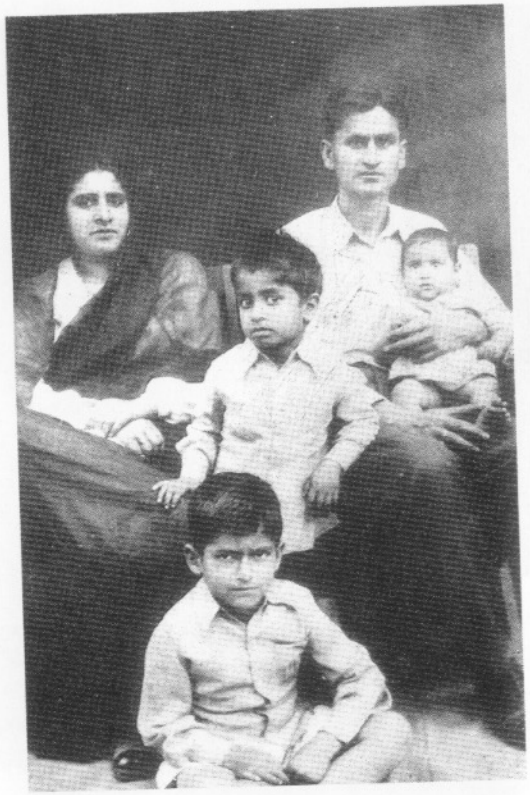

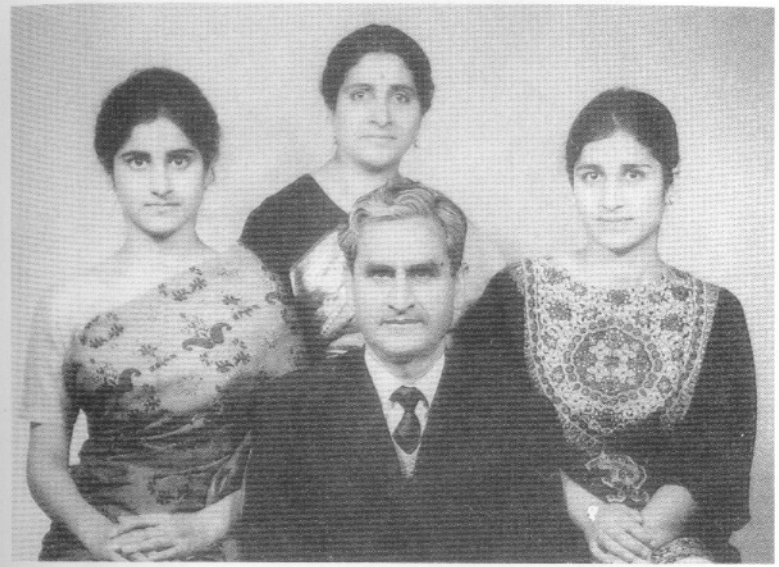

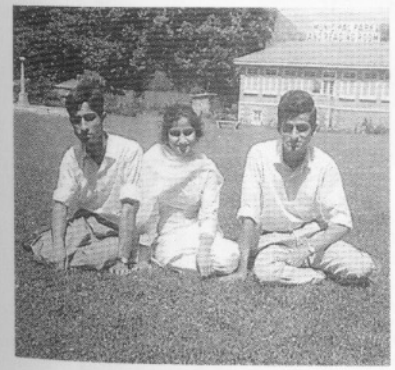

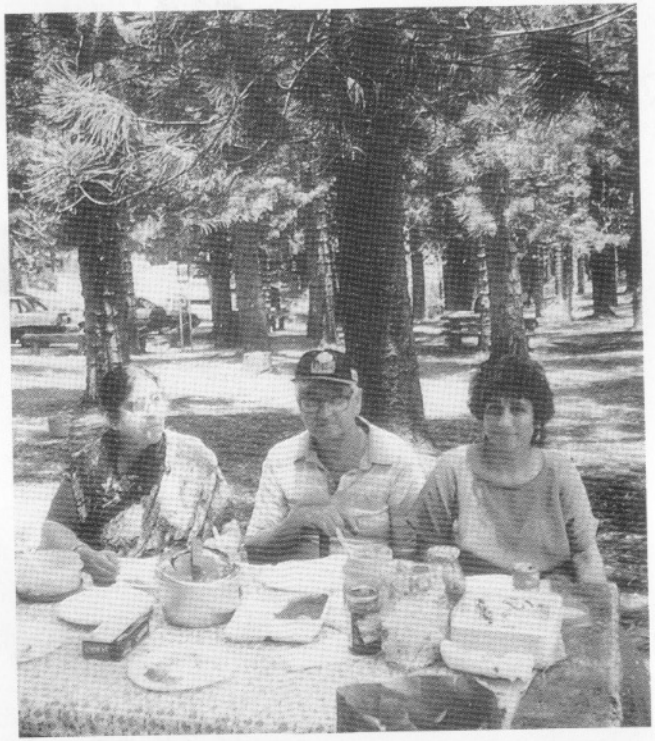

अग्नि

अग्नि का आराम
और जलाना
साथ है
जीवन और मृत्यु
साथ हैं।

कयामत रोज़ आती है
हर पल
क्या से क्या
हो जाता है।

बैठे हैं
कयामत द्वार पर
लगा के नारा
बस एक है
तू हमारा
बस एक
तू हमारा।

आकाश

वह कैसा लड़कपन था
जब मैं आकाश से
उड़ के दौड़ती
कोई पीछे दौड़ता
मेरा सारा काम
कर जाता।

रिश्ता

मेरे चारों ओर
सुख के सामान
उन के बीच
मैं ही नहीं
मेरे विचारों का
अलग संसार
जिसमें सुख साधन नहीं।

वास्तविक्ता
जो मुझे घेरे प्रतिक्षण
उस के साथ
इस संसार का
कोई रिश्ता नहीं।

प्रलय

प्रलय और सृष्टि
एक के दो रूप
एक खेल।

जब गगनचुंबी
प्रासाद गिरा
एक अन्धे को
उसका पालतू कुत्ता
सीढ़ियों से नीचे लेकर
बाहर ले गया।

दूर एक महासागर में
शरणार्थियों की नौका
डूब गई।

प्रियतम के गुण

जिस गुण से प्रेम हो
वह पीड़ा का
स्रोत है।
सौन्दर्य से प्रेम हो
सून्दरता शीघ्र ही
नष्ट होती है।

माया

यह जीवन
अन्त से
उल्टा गिनना है।

सुबह होती है
शाम होती है
केवल स्मृति वृत्त
और दोनों आँखों में
चित्र-अलबम।

माया धीरज देती है।
शक्ति है।

मां

मां
एक वृक्ष -
उसकी छाया तले
जीवन।
नि:स्वार्थ भाव की
प्रतिमूर्ति।
शिक्षक,
ममता
स्नेह और विनय की।

विदाई

जब मुझ से
विदाई ली
मेरी सुध
बेहोश थी
यह नहीं
मैंने सोचा था।

कितना शक्तिशाली
वह पल था
जब वह
शान्ति के विमान पर
सवार हो चले।
न किसी को ढूंडा
न किसी को चाहा।

यह माया
विचित्र
ज़ार ज़ार हंस रही
क्यों रो रही है।

पूर्णता

भगवान
सब प्रकार से
पूर्ण है।
जो उनसे
निकलता है –
जैसे यह प्राकृत जगत –
वह भी पूर्ण है।

पूर्ण निराकार नहीं
इसी से दिक्काल
निकलता है
आकार निकलता है।

अन्तर्यामी आत्मा
अपूर्ण है
इसकी शक्ति
आकार में बन्दी।

प्राकृत-जगत ही पूर्णता
हम भूल जाते हैं
अतीत को अपनाते हैं
भूल जाते हैं
वह एक खेल था।

कला

गाना बजाना
एक कला है
जिससे अकेलापन
संगति में
मिल जाता है।

दूसरी कला है
जब अकेलापन ही
एक नया संगीत
बन जाता है।

कामना

मनुष्य
कामना के पीछे
दौडता है।
कामना
पूरी नहीं होती
दु:ख होता है।

जीवन
अपूर्ति है
कामनाओं की
दु:ख है
पीड़ा है।

कामनाओं का त्याग
प्रभु का स्मरण
एक उपाय।

प्रभु न पाने की पीड़ा
अलग है।

राम और कृष्ण

आज की पीढ़ी
कहती है
हम नहीं आपके
राम को कृष्ण को
मानते हैं
नहीं आपके शिव को
मानते हैं
हम दिन रात
विश्व भर की
पुस्तकें पढ़ते हैं।
उसी में
आनन्द है।

भई, ठीक है
मगर हमें मत रोको
हमें भी
अपना आनन्द है
रूप में
सन्तोष है

हमें मत टोको
यह सारा
यादों पर टिका है।

व्यूहचक्र

व्यूह चक्र चलता है
रूकता नहीं
माता पिता के
वो परिवार
धागे हैं
पितरों की याद
गांठें,
जो धागों को
मज़बूत
बनाती हैं।

सालों से दौड़ रही हूँ
जीवन इसी का नाम है।
कभी थोड़ा सा रूकती हूँ
फिर सोचती हूँ
यह ठीक नहीं है
अपने को
कठोर बनाना है
अकेले आयी थी
अकेले जाना है।

भीतर की शक्तियाँ

शरीर माटी है
ध्यान जल है
दोनों के मिलन से
छोटे पौधे
भीतर की शक्तियाँ
जागृत होते हैं।

कौन कहता है,
विश्वास नहीं
प्रमाण दो।

बाहर जाओ
मिट्टी में देखो
कितना बल है,
कितनी योनियों का
जीवन है,
छोटा बीज
महान वृक्ष
बन जाता है।

जब
भीतर की शक्तियाँ
जाग जाती हैं
सुन्दर अनुभव होता है।

प्रकृति

प्रकृति
कितना दु:ख सहती है
हमारे लिए
हरियाली, फल फूल
उपजाती है
पर हम स्वार्थी
सब नष्ट करते हैं
प्रकृति के सौन्दर्य को भी
देखते नहीं।

सच्ची कमाई

जो कहते हैं
सब धनवान हैं
कुछ जानते नहीं।

भागते हैं
मन्दिर और मस्जिद
दान देने
इस आशा में
ख्याति हो
पर हृदय में
दया नहीं।

मज़दूर
जो घर बनाता है
ईंटें ढोता है
चार मन्ज़िल
उसकी थकावट
कोई नहीं देखता।

मज़दूर और परिवार
चूल्हे के इर्द गिर्द
बैठ कर
रोटी खाते हैं।
जो सुख है उसमें
धन में नहीं।
मिट्टी से जो निकट हैं
उन्हें अधिक आराम है।

उपवन

प्रातः
मैं एक उपवन जाती हूँ
जूते निकाल
हरी घास के ओस पर
चलती हूँ।
पथ एक ऊँचाई पर
जाता है
वहाँ पहाड़ के
पत्थर हैं
और एक शिला है
जिस पर बैठती हूँ।

प्रकृति के सौन्दर्य से
विभोर उठती हूँ
जो शब्द के परे है।
रोम रोम
सत्य से
खिल उठता है।

लगता है
मैंने सब पा लिया है।
केवल
श्रद्धा और दया
चाहिए।

संकल्प

विश्व संकल्प है।
दृढ़ निश्चय में
भगवान है।

संकल्प से
सृष्टि चलती है।
गौरव, ज्ञान, मुक्ति
संकल्प की सनतान।

उठो जागो
आँखें खोलो
जीवन
तुम्हारे हाथ में है।

तुम भगवान हो
सब कुछ
कर सकते हो।

साहस

साहस अवसर के साथ
बढ़ता है
सच्ची उमंग
चाहिए।
उद्यम स्वर्ग है
आलस्य नरक।

स्वराज्य है
आत्मबल के आधार पर
खड़े होना।

यह हाथ
ऐश्वर्यवान है।
यह दूसरा हाथ
और भी अधिक
ऐश्वर्यवान।

सुख एक कल्पना है
जहाँ साहस
ले जाता है।